पाठ-6

भक्ति के पद

आइए सीखें : ● प्रभु के प्रति अनन्य प्रेम, समर्पण एवं भक्ति-भावना का विकास ● तत्सम शब्द और पर्यायवाची शब्द ● छंद परिचय-दोहा, सोरठा की जानकारी।

*(**पाठ-परिचय :** इस पाठ में भक्ति-भावना से भरे चार पद हैं। सूर के पद में प्रभु के प्रति अनन्य और अटूट प्रेम का वर्णन है। वे तो प्रभु के सामीप्य में ही सच्चा सुख पाते हैं। तुलसी भी ईश्वर के अनन्य आराधक हैं। वे प्रभु के चरणों में ही अपना अनुराग चाहते हैं। रैदास की भक्ति में भी वही अनन्यता है; वे प्रभु के साथ एकाकार होना चाहते हैं। मीराबाई का प्रभु-प्रेम भी समर्पण भाव लिए है। वे ईश्वर के प्रति पूर्णत: समर्पित भाव व्यक्त करती हैं। इस प्रकार इन चारों पदों में भक्ति-भावना, ईश्वर की शरण में जाने का दृढ़ संकल्प, विनय, एकनिष्ठ प्रेम और समर्पण भाव का सरस चित्रण है।)*

1.

मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी, फिरि जहाज पर आवै।
कमल-नैन कौ छाँड़ि महातम और देव को ध्यावै ?
परम गंग कौ छाँड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।
जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यों करीलफल भावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै ?

- सूरदास

शिक्षण-संकेत - ■ पदों के हाव-भाव और लय के साथ प्रस्तुत करें। बच्चों से भी सुनें। ■ बच्चों की सहायता से प्रत्येक पद का भाव स्पष्ट करें। ■ भक्ति-भावना से ओत-प्रोत अन्य कविताएँ सुनाएँ। ■ काव्य की सौन्दर्यानुभूति से परिचय कराएँ। ■ कठिन शब्दों के अर्थ बच्चों की सहायता से वाक्य प्रयोग, पर्याय और विलोम शब्द बताकर स्पष्ट करें। ■ पदों को कण्ठस्थ कराएँ।

(2)

जाऊँ कहाँ तजि चरन तिहारे?
काको नाम पतितपावन? जग केहि अति दीन पियारे?
कौन देव बराय बिरद-हित, हठि-हठि अधम उधारे?
खग, मृग, ब्याध, पषान, बिटप, जड़, जवन कवन सुर तारे?
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब, माया-बिबस बिचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा 'अपनपौ हारे' ॥

- तुलसीदास

(3)

अब कैसे छूटै नाम रट लागी ।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी॥
प्रभु जी तुम घन वन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा ।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी ज्योति बरे दिन राती ॥
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करे रैदासा ॥

- रैदास

(4)

पायो जी मैंने, राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो॥
जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो ॥
सत की नाव, खेवटिया सतगुरु, भव-सागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो॥

- मीराबाई

सूरदास – कृष्णभक्त सूरदास का जन्म मथुरा – आगरा सड़क के किनारे बसे रुनकता गाँव में सन् 1478 ई. में हुआ था। ये जन्मान्ध थे। संगीत प्रतिभा जन्म से ही थी। गऊघाट पर रहकर ईश्वर –भजन करते थे। यहाँ से महाप्रभु वल्लभाचार्य की प्रेरणा पाकर रंगनाथ जी के मंदिर में आ गए और श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान पदों के माध्यम से करने लगे। 'सूरसागर' ग्रंथ श्रीकृष्ण की लीला का असीम सागर, असंख्य लहरें अपने में संजोए हैं। सन् 1582 में इनका निधन हो गया। 104 वर्ष का यशस्वी जीवन इन्होंने पाया।

तुलसीदास– रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि तुलसी का जन्म सन् 1532 में बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। इनके गुरु नरहरिदास थे। गुरु की कृपा से इन्हें भक्ति–मार्ग मिला। आपने राम–भक्ति में लीन रहकर 'रामचरितमानस' की रचना की तथा अन्य कई ग्रंथ लिखे। सन् 1623 में 91 वर्ष की उम्र में इनका निधन हो गया।

रैदास – संत रैदास का जन्म सन् 1388 में वाराणसी उ.प्र. में हुआ। सन् 1518 में इनका निधन हुआ। 130 वर्षों की सुदीर्घ आयु इन्हें मिलीं। रैदास अपने समय के प्रसिद्ध महात्मा थे। साधना और अनुभव के आधार पर इन्होंने ज्ञान प्राप्त किया। ये भक्ति के लिए वैराग्य को अनिवार्य मानते थे। इनकी दृष्टि में परम तत्व सत्य है, जो अनिवर्चनीय और व्याख्या से परे है।

मीराबाई – मीरा का जन्म सन् 1498 में राजस्थान के चौकड़ी (मेड़ता) जोधपुर में हुआ था। मीरा पर अपने पितामह दूदा जी का प्रभाव था; वे वैष्णव भक्त थी। मीरा का विवाह उदयपुर के राणा साँगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ किन्तु असमय ही उनका निधन हो गया। मीरा ने अपना मन संसार के माया–मोह से हटा लिया और वे श्रीकृष्ण के रंग में रँग गई। सन् 1546 में मीरा का निधन हो गया।

टिप्पणी :

बिटप – श्राप के कारण यमलार्जुन वृक्ष बन गए थे। द्वापर में श्रीकृष्ण ने उनका उद्धार किया था।

व्याध – वाल्मीकि जो पहले डाकू थे। राम शब्द का उल्टा जप करके जिनके जीवन का कल्याण हुआ।

खग – जटायु पक्षी सीता हरण के समय, सीता को बचाने के लिए रावण से संघर्ष करते हुए घायल हो गया था। राम ने उसका उद्धार किया।

मृग – मारीच रावण का सम्बन्धी था जो रावण की सहायता के लिए कपट–मृग (स्वर्णमृग) बना था, जिसका राम के द्वारा उद्धार किया गया।

पाषाण – अहिल्या गौतम ऋषि की पत्नी थीं, जो श्राप के कारण पत्थर की शिला बन गई थीं। भगवान राम के चरणों के प्रताप से उनका उद्धार हुआ।

अभ्यास

बोध–प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए –

पंछी	----------	छाँड़ि	----------
कूप	----------	छेरी	----------
मधुकर	----------	अम्बुज	----------
तजि	----------	अधम	----------
उधारे	----------	दनुज	----------
बास	----------	घन	----------
चकोरा	----------	पूँजी	----------

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए–

क सूर के मन को सुख कहाँ प्राप्त होता है?

ख अधम का उद्धारक कौन है?

ग रैदास किस के आराधक थे?

घ मीराबाई को कौन–सा रत्न प्राप्त हो गया?

प्रश्न 3. निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए –

क. ''प्रभु जी तुम चंदन हम पानी'' पंक्ति किस कवि की है?

(अ) सूर (आ) तुलसी (इ) रैदास (ई) मीराबाई

ख. तुलसीदास की भक्ति निम्नलिखित में से किस भाव की है?

(अ) सखा भाव (आ) दास भाव (इ) मित्र भाव (ई) गुरु भाव

ग. ब्रजभूमि में किस की झाड़ियाँ (कुंज) अधिक मिलती हैं?

(अ) आम (आ) जामुन (इ) नीम (ई) करील

घ. निम्नलिखित रचनाकारों में से किसका संबंध राजस्थान से था?

(अ) सूर (आ) तुलसी (इ) मीरा (ई) बिहारी

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क. 'जहाज का पक्षी' किस बात का प्रतीक है? आशय स्पष्ट कीजिए।

ख. तुलसी ने किस-किसके उद्धार का उल्लेख किया हैं?

ग. रैदास ने भगवान से अपना संबंध स्थापित करते हुए किस - किससे अपने को जोड़ा है?

घ. मीरा की भक्ति-भावना पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

प्रश्न 5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए -

क. कौन देव बराय बिरद - हित, हठि-हठि अधम उधारे?

ख. सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै?

प्रश्न 6. निम्नलिखित पंक्तियों का संदर्भ सहित भाव स्पष्ट कीजिए -

क. प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।

ख. पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।

वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।

जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।

खरचै नहिं कोइ चोर न लेवै, दिन - दिन बढ़त सवायो॥

भाषा-अध्ययन

1. दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) पंछी तद्भव शब्द है। इसका तत्सम रूप ..... है।

(पक्षी/पक्षि/पंच्छी)

(ख) चरन तद्भव शब्द है। इसका तत्सम रूप ..... है।

(पैर/चारन/चरण)

(ग) कमल का पर्यायवाची ..... शब्द है।

(नीरद/जलद/नीरज)

(घ) रात का पर्यायवाची ..... है।

(दिननाथ/रजनीपति/रजनी)

2. निम्नलिखित पहेली में रात, पानी, कमल के दो-दो पर्यायवाची शब्द दिए हैं। उन्हें ढूँढ़िए तथा लिखिए -

र	रा	त्रि	तो
ज	ल	ज	य
नी	र	ज	ज

3. तालिका में दिए गए शब्दों की सही जोड़ी बनाइए -

तालिका

तद्भव शब्द	**तत्सम शब्द**
महातम	दुर्मति
दुरमति	स्वर्ण
मानुस	माहात्म्य
सोना	मनुष्य

पढ़िए, सोचिए और कंठस्थ कीजिए -

1. हरी डारि ना तोड़िए, लागै छूरा बान।
दास मलूका यों कहै, अपना-सा जी जान॥

-मलूकदास

2. तुलसी मीठे वचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरन इक मंत्र है, तज दे वचन कठोर ॥

- तुलसीदास

3. फूलहिं फलहिं न बेंत, जदपि सुधा बरसहिं जलद।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं बिरंचि सम॥

- तुलसीदास

अब बताइए -

1. क्रमांक 1 और 2 दोहा के उदाहरण हैं और 3 सोरठा का उदाहरण है।

आइए जानें -

छन्द रचना की जानकारी देने वाले शास्त्र को पिंगल कहते हैं।

निश्चित गति और यति के क्रम से जो काव्य रचना होती है, उसे छन्द कहते हैं। 'गति' = प्रवाह, 'यति' = विराम

छंद के प्रकार -

छंद दो प्रकार के हैं - मात्रिक और वर्णिक।

मात्रिक छंद - इनकी रचना मात्राओं की गिनती के आधार पर होती है। उपर्युक्त उदाहरण में दो मात्रिक छंद हैं - दोहा और सोरठा।

दोहा छंद - यह मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके विषम चरणों (पहले और तीसरे) में 13-13 मात्राएँ तथा सम चरणों (दूसरा और चौथा) में 11-11 मात्राएँ होती हैं। उदाहरण -

|ऽ ऽ। ऽ ऽ।ऽ ऽऽ ऽऽ ऽ।

हरी डारि ना तोड़िए, लागै घूरा बान।

पहला चरण –13 मात्राएँ दूसरा चरण – 11 मात्राएँ

ऽ। ।ऽऽ ऽ ।ऽ ।।ऽ ऽ ऽ ऽ।

दास मलूका यों कहै, अपना सा जी जान॥

तीसरा चरण –13 मात्राएँ चौथा चरण–11 मात्राएँ

सोरठा छंद –यह मात्रिक छंद, दोहा का उल्टा है। इसके विषम चरणों में 11–11 मात्राएँ तथा सम चरणों में 13–13 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण

ऽ।। ।।। । ऽ। ।।। ।ऽ ।।।। ।।।

फूलहिं फलहिं न बेंत, जदपि सुधा बरषहिं जलद ।

(पहला चरण 11 मात्राएँ) (दूसरा चरण 13 मात्राएँ)

ऽ।। ।।। । ऽ। ऽ।। ।।। ऽऽ। ।।

मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचि सम ॥

(तीसरा चरण 11 मात्राएँ) (चौथा चरण 13 मात्राएँ)

छंद के अंग

चरण, यति, गति, मात्रा, तुक, गण छंद के अंग हैं ।

चरण– छंद पंक्तियों में बँटा रहता है और पंक्ति चरण में अर्थात् छंद की पंक्ति के एक भाग को चरण कहते हैं। उदाहरण –

'हरी डारि ना तोड़िए,' तथा लागै छूरा बान दो चरण हैं।

यति – छंद में जहाँ अल्प समय के लिए रुकना पड़े, वह यति कहलाती है।

गति – छंद के प्रवाह को गति कहते हैं।

तुक – छंद के चरणों के अंत में समान वर्ण आने को तुक कहते हैं।

तुकान्त– जब चरणान्त में समान वर्ण आएँ तब तुकान्त स्थिति होती है।

अतुकान्त – छंद के अन्त में असमान वर्ण आते हैं तब अतुकान्त स्थिति होती है।

मात्रा- किसी स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है, उसे मात्रा कहते हैं।

मात्राएँ दो प्रकार की होती हैं-

1. ह्रस्व 2. दीर्घ

ह्रस्व मात्रा (लघु) : इसके उच्चारण में कम समय लगता है। ह्रस्व स्वर की एक मात्रा गिनी जाती है। इसका चिह्न '।' है।

अ, इ, उ, ऋ स्वर की मात्रा ह्रस्व है

दीर्घ मात्रा (गुरु) - ह्रस्व स्वर से दीर्घ मात्रा के उच्चारण में दुगना समय लगता है। इसकी दो मात्राएँ गिनी जाती हैं। इसका चिह्न 'ऽ' है।

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ - स्वर की मात्राएँ दीर्घ होती हैं।

4. निम्नलिखित छंदों में प्रयुक्त मात्राएँ गिनकर लक्षण के अनुसार छंद का नाम लिखिए

क. वृक्ष कबहु नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर॥

ख. कुन्द इन्दु सम देह, उमा रमन करुना अयन ।
जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दन मयन ॥

ग. जेहि सुमिरत सिधि होय, गणनायक करि वर वदन ।

योग्यता विस्तार

करहु अनुग्रह सोय, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥

1. पाठ के आधार पर कक्षा में खग, मृग, ब्याध, पाषान, विटप शब्दों के माध्यम की गई बात पर चर्चा कीजिए।
2. बाल सभा में विभिन्न संत कवियों द्वारा रचित पदों को हाव भाव के साथ सुनाइए।
3. प्रस्तुत पदों में से ब्रज भाषा के शब्द छाँटकर उनकी तालिका बनाइए और उसके सामने मानक हिन्दी के शब्द लिखिए।
4. बाल-सभा के अवसर पर अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में दोहा, सोरठा, चौपाई और पदों के अंश सुनाइए तथा छंद में निहित मात्राओं का अभ्यास कर आपस में जाँच कीजिए।